ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–०५
दिनांक- मंगलवार, १८ जनवरी, २०२२

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 18.1 एवं 8.1 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 97 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 72 प्रतिशत, हवा की औसत गति 4.1 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 1.7 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 4.5 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 11.9 एवं दोपहर में 19.0 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(19–23 जनवरी, 2022)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 19–23 जनवरी, 2022 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में अगले दो दिनों तक आसमान साफ तथा मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। अगले २–३ दिनों तक ठंड का प्रकोप बने रहने की सम्भावना है। उसके बाद हल्के से मध्यम बादल छा सकता है जिसके कारण २३ जनवरी के आसपास हल्की वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 17 से 19 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 8 से 10 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। अगले २–३ दिनों तक पछिया हवा चलने के कारण ठंढ़ में वृद्धि हो सकती है।
- अगले २–३ दिनों तक पछिया हवा उसके बाद पुरवा हवा चलने की संभावना है। इस दौरान हवा की रफ्तार औसतन 6 से 8 कि0मी0 प्रति घंटा रह सकती है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 85 प्रतिशत तथा दोपहर में 50 से 55 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- वर्त्तमान मौसम आलू की फसल में पिछेती झुलसा रोग के फैलाव के लिए अनुकूल है। कृषक भाई फसल की नियमित रुप से निगरानी करें। इस रोग में फसलों की पत्तियों के किनारे व शिरे से झुलसना प्रारंभ होती है जिसके कारण पुरा पौधा झुलस जाता है। इसके बचाव हेतु २.० से २.५ ग्राम इण्डोफिल एम० ४५ फफूँदी नाशक दवा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें। इस छिड़काव के ८–१० दिनों बाद पुनः रीडोमिल दवा का १.५ से २.० ग्रम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें। कटवर्म या कजरा पिल्लू कीट का प्रकोप फसल में दिखनें पर बचाव के लिए क्लोरपायरीफॉस २० ई०सी० दवा का २.५ से ३ मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव मौसम साफ रहने पर करें।
- पिछात बोयी गई गेहूँ की फसल में खर-पतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दें। फसल में जिंक की कमी के लक्षण (गेहूँ के पौधों का रंग हल्का पीला हो जाना) दिखाई दें रहें हो तो २.५ किलोग्राम जिंक सल्फेट, १.२५ किलोग्राम बुझा हुआ चुना एवं १२.५ किलोग्राम युरिया को ५०० लिटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से १५ दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव मौसम साफ रहने पर करें।
- मटर में फली छेदक कीट की निगराणी करें। इस कीट के पिल्लू फलियों में जालीनूमा आवरण बनाकर उसके नीचे फलियों में प्रवेश कर अन्दर ही अन्दर मटर के दानो को खाती रहती हैं। एक पिल्लू एक से अधिक फलियों को नष्ट करता है। अक्रान्त फलियाँ खाने योग्य नही रह जाती, जिससे उपज में अत्यधिक कमी आती है। कीट प्रबन्धन हेतु प्रकाश फंदा का उपयोग करें। १५-२० टी आकार का पंछी वैठका (वर्ड पर्चर) प्रति हेक्टर लगावे। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफास २५ ई० सी० या नोवाल्युरॉन १० ई० सी० का १ मि० ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव मौसम साफ रहने पर करें।
- अरहर की फसल में फल मक्खी कीट की निगराणी करे। इस कीट के मैगट सर्वप्रथम अरहर के पौधे के तने में छेद करके उसे खाते है। जिससें पौधे के तने एवं शाखाये सुखने लगती है। बाद में दाना आने पर बीजों को खाते है। जिस स्थानों पर मैगट खातें है, वहाँ कवक एवं जीवाणु उत्पन हो जाते है। फलस्वरूप ऐसे दाने खाने योग्य नही रह जाते है और उपज में काफी कमी आती है। इस कीट से बचाव के लिए करताप हाईड्रोक्लोराइड दवा १.५ मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।
- आलू की फसल की नियमित निरीक्षण करें। अभी इस फसल पर झुलसा रोग का अधिक प्रकोप होने की संभावना है । बचाव के लिए रिडोमिल नामक दवा का १.५ ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें। खेतों में नमी को देखते हुए आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। टमाटर, मटर एवं मक्का की फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई मौसम साफ रहने पर करें।
- सरसों की फसल में लाही कीट की नियमित रुप से निगरानी करे। यह सुक्ष्म आकार का कीट पौधो के सभी मुलायम भागो-तने व फलीयों का रस चुसते है। ये कीट मधु-स्त्राव निकालते है, जिससे पौधे पर फंगस का आक्रमण हो जाता है तथा जगह-जगह काले धब्बे दिखाई देते हैं। ग्रसित पौधों में शाखाएँ कम लगती हैं। पौधे की बढ़वार रुक जाती है। पौधे पीले पड़कर सुखने लगते है। फलीयाँ कम लगती है तथा तेल की मात्रा में भी कमी आती है। इस कीट से बचाव के लिए डाईमेथोएट ३० ई०सी० दवा का १.० मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव मौसम साफ रहने पर करें।
- मिर्च की फसल में थ्रिप्स कीट की निगरानी करे। इसके शिशु/वयस्क कीट सैकड़ो की संख्या में पौधो की पत्तियो की निचली सतह पर छिपे रहते हैं और कभी-कभी उपरी सतह पर भी देखे जा सकते हैं। ये पत्तियो, कलियो व फूलो का रस चुसते है। यह कीट मिर्च में बांझी/ विषाणु रोग फैलाता है। इससे बचाव हेतु इमिडक्लोप्रीड १७.८ ई०सी० का १ मि०ली० या डायमेथोएट ३० ई०सी० का २ मि०ली० प्रति ३ लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव मौसम साफ रहने पर करें।

आज का अधिकतम तापमानः 13.5 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 8.9 डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः 9.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.9 डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी